Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मीके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्र	उ ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	केंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रुन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्रोह	स्नेह	वक्फ़	वक़्	लड्डू	लडू	द्वंद्व	द्रंद्र	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध् ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्नह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुरीं	कुर्री
पद्म	पदा	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़्म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज़ैय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	ह्रप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लासउ की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

वेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गीरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डील डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हँ, कर दिखाता हँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदेभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव पपखपवपवखवव पपगपवपवगवव पपघपवपवघवव पपङ्पवपवङ्वव पपचपवपवचवव पपछपवपवछवव पपजपवपवजवव पपझपवपवझवव पपञपवपवञवव पपटपवपवटवव पपठपवपवठवव **uusuauasaa** पपढपवपवढवव पपणपवपवणवव पपतपवपवतवव पपथपवपवथवव पपदपवपवदवव पपधपवपवधवव पपनपवपवनवव **uuuuauauaa** पपफपवपवफवव *<u>uuauauaaaa</u>* पपभपवपवभवव **чинчачанаа** पपयपवपवयवव पपरपवपवरवव पपलपवपवलवव पपळपवपवळवव **uuauauaaa** पपशपवपवशवव पपषपवपवषवव पपसपवपवसवव

पपहपवपवहवव
पपकपवपवक्रवव
पपखपवपवख़वव
पपग़पवपवग़वव
पपज़पवपवज़वव
पपज़पवपवज़वव
पपड़पवपवड़वव
पपढ़पवपवढ़वव
पपफ़पवपवक़वव
पपफ़पवपवख़वव
पपम्रपवपवस्वव
पपसपवपवस्वव
पपझपवपवझवव
पपझपवपवझवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव पपऄपवपवऄवव पपॲपवपवॲवव पपइपवपवइवव पपईपवपवईवव **uu**3uaua3aa पपऊपवपवऊवव **чч**एपवपवएवव पपऐपवपवऐवव पपऍपवपवऍवव पपऎपवपवऎवव पपआपवपवआवव पपओपवपवओवव पपऔपवपवऔवव **чч**жчачажаа पपऋपवपवऋवव पपॡपवपवॡवव पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव

पपख्रपवपवख्रवव

पपग्रपवपवग्रवव पपघ्रपवपवघ्रवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपचपवपवच्चवव पपछुपवपवछुवव पपज्रपवपवज्रवव पपझपवपवझवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपट्रपवपवट्रवव **чидчачадаа** पपडूपवपवडूवव पपढूपवपवढूवव पपण्रपवपवण्रवव पपत्रपवपवत्रवव पपथ्रपवपवथ्रवव पपद्रपवपवद्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपन्रपवपवन्नवव **ч**чучачауаа पपफ्रपवपवफ्रवव पपब्रपवपवब्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपम्रपवपवम्रवव पपग्रपवपवग्रवव पपरूपवपवरूवव पपत्रपवपवत्रवव पपव्रपवपवव्रवव पपश्रपवपवश्रवव पपष्रपवपवष्रवव पपस्रपवपवस्रवव पपह्रपवपवह्नवव

पपळ्रपवपवळ्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपञ्चपवपवञ्चवव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव पपरुपवपवरुवव पपरूपवपवरूवव पपड्यपवपवड्यवव पपज्जपवपवज्जवव पपज्थपवपवज्थवव पपज्यपवपवज्यवव पपज्सपवपवज्सवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपट्यपवपवट्यवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपड्यपवपवड्यवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपट्टपवपवट्टवव पपटूपवपवटूवव पपठूपवपवठूवव पपड्डपवपवड्डवव पपड्टपवपवडूवव पपढ्रपवपवढूवव पपत्तपवपवत्तवव पपत्खपवपवत्खवव पपत्थपवपवत्थवव पपत्नपवपवत्नवव पपत्सपवपवत्सवव पपत्यपवपवत्यवव पपद्धपवपवद्धवव पपद्गपवपवद्गवव पपद्वपवपवद्भवव पपद्धपवपवद्भवव

पपद्वपवपवद्ववव पपद्धपवपवद्धवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपद्धपवपवद्भवव पपहुपवपवहुवव पपश्चपवभवव पपन्मपवपवन्मवव पपल्जपवपवल्जवव पपल्थपवपवल्थवव पपत्भपवपवत्भवव पपल्मपवपवल्मवव पपल्यपवपवल्यवव पपद्यपवपवद्यवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपष्टपवपवष्टवव पपश्चपवभवव **uuguauagaa** पपल्जपवपवल्जवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्मपवपवह्मवव पपह्यपवपवह्यवव पपह्लपवपवह्लवव पपह्नपवपवह्नवव

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव पपहूपवपवहूवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहुवव पपहृपवपवहुवव पपहृपवपवहृवव

पपरुपवपवरुवव पपरूपवपवरूवव पपदुपवपवदुवव पपदूपवपवदूवव पपदुपवपवदुवव पपदुपवपवदुवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकूपप पपपृपपरृपपकृपप पपपृपपरृपपकृपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप

पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव **Numeral spacing**

Letter-punct spacing

पपक, पवक. पपख, पवख. पपग, पवग. पपघ, पवघ. पपङ. पवङ. पपच, पवच. पपछ, पवछ. पपज, पवज. पपझ, पवझ. पपञ, पवञ. पपट, पवट. पपठ, पवठ. पपड, पवड. पपढ, पवढ. पपण, पवण. पपत, पवत. पपथ, पवथ. पपद, पवद. पपध, पवध.

पपन, पवन.

पपप, पवप.

पपफ, पवफ. पपब, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपय, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल. पपळ, पवळ. पपत, पवत.

पपव, पवव. पपश, पवश. पपष, पवष. पपस, पवस. पपह, पवह. पपक्र, पवक्र.

पपख़, पवख़. पपख़, पवख़. पपग़, पवग़. पपज़, पवज़.

पपड़, पवड़. पपढ़, पवढ़. पपफ़, पवफ़.

पपय़, पवय़. पपक्ष, पवक्ष. पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपॲ, पवॲ. पपइ, पवइ. पपई, पवई.

पपउ, पवउ. पपऊ, पवऊ. पपफ, पवए. पपऐ, पवऐ. पपऍ, पवऍ.

पपऎ, पवऎ.

पपआ, पवआ. पपओ, पवओ. पपऔ, पवऔ. पपऋ, पवऋ. पपऋ, पवऋ. पपॡ, पवॡ. पपॡ, पवॡ.

पपङ्ग, पवङ्ग. पपछ्र, पवछ्र. पपट्र, पवट्र. पपठ्र, पवठ्र.

पपड्र, पवड्र. पपढ्र, पवढ्र. पपद्र, पवद्र. पपर्र, पवर्र.

पपह्र, पपर्र. पपह्र, पवह्र. पपळ्र, पवळ्र.

पपक्त, पवक्त. पपरू, पवरू. पपरू, पवरू. पपट्ट, पवट्ट.

पपट्ठ, पवट्ठ. पपट्ठ, पवट्ठ. पपड्ड, पवड्ड. पपड्ड, पवड्ड. पपढ्ट, पवट्ट.

पपद्ध, पवद्ध. पपद्ग, पवद्ग. पपद्ध, पवद्ध.

पपद्भ, पवद्भ. पपद्भ, पवद्भ. पपद्भ, पवद्ध. पपद्द, पवद्द. पपष्ट, पवष्ट. पपभ्भ, पवभ्भ. पपष्ठ, पवष्ठ. पपल्ज, पवल्ज. पपह्ल, पवह्ल.

पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न.

पपहु, पवहु. पपहू, पवहू. पपहृ, पवहू. पपहृ, पवहू. पपहू, पवहू. पपहू, पवहू. पपरू, पवरू. पपरू, पवरू. पपद्, पवदू.

-पपक; पवक: पपख; पवख: पपग; पवग: पपघ; पवघ:

पपदू, पवदू.

पपद्, पवद्.

पपघ; पवघ: पपङ; पवङ: पपच; पवच: पपछ; पवछ:

पपज; पवज: पपझ; पवझ: पपञ; पवञ: पपट; पवट:

पपठ; पवठ:

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्टु; पवड्टु:	पपघ। पवघ:	पपड़। पवड़:	पपह्न। पवहः	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपड्डुं; पवड्डुं:	पपङ। पवङः	पपढ़। पवढ़:	पपळू। पवळू:	पपदु। पवदुः
पपण; पवण:	पपई; पवई:	पपढूँ; पवढूँ:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदू। पवदूः
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्धः, पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्र। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृं। पवदृः
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्ग; पवद्गः	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्षः	पपरु। पवरु:	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपऋ। पवऋः	-
पपध; पवध:	पपऐ; पवऐ:	पपद्भः, पवद्भः	पपञ। पवञः		पपट्ट। पवट्टः	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्व; पवद्वः	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ट। पवट्टः	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्ध; पवद्धः	पपठ। पवठः	पपञ्जे। पवञै:	पपठ्ठ। पवठ्ठः	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्द; पवद्द:	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्ट; पवष्टः	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपभः; पवभः:	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढूँ। पवढूँ:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवतः	पपउ। पवउ:	पपद्धै। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपल्ज; पवल्जः	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्न; पवह्नः	पपद। पवदः	पपए। पवए:	पपद्ध। पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपल; पवल:	पपत्रृ; पवत्रृ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवधः	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपव; पवव:		पपह्न; पवह्न:	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपशः; पवशः	पपङ्गः, पवङ्गः		पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्द। पवद्दः	पपड! पवड?
पपष; पवष:	पपछ्र; पवछ्र:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्ट। पवष्टः	पपढ! पवढ?
पपस; पवस:	पपट्र; पवट्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपन्भ। पवन्भः	पपण! पवण?
पपह; पवह:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहें; पवहें:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपकः; पवकः	पपड्र; पवड्र:	पपहॄ; पवहॄ:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपल्ज। पवल्जः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपढ्र; पवद्र:	पपहु; पवहु:	पपर। पवर:	पपत्र। पवत्रः	पपह्न। पवह्नः	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवलः	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्नः	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरुः; पवरुः:	पपळ। पवळ:		पपह्न। पवह्नः	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्र; पवह्र:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्न। पवह्नः	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपश। पवशः	पपङ्ग। पवङ्गः 		पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदू; पवदू:	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्रः	पपहु। पवहुः	पपब! पवब?
पपय़; पवय़:	पपक्तः, पवक्तः	पपर्वृः पवर्वृः	पपस। पवसः	पपट्र। पवट्रः	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपरुः, पवरुः		पपह। पवहः	पपठ्र। पवठ्रः	पपह्नै। पवह्नैः	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपऋ; पवऋ:	-	पपक्र। पवकः	पपड्र। पवड्रः	पपहूं। पवहूं:	पपय! पवय?
	पपट्टः, पवट्टः	पपक। पवकः	पपख़। पवख़:	पपद्र। पवद्रः	पपहुँ। पवहुँ:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठः पवट्ठः	पपख। पवख:	पपग्र। पवगः	पपद्र। पवद्र: 	पपहूँ। पवहूँ:	पपल! पवल?
पपऄ; पवऄ:	पपठ्ठ; पवठ्ठः	पपग। पवग:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपर्। पवर्:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्र?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्द-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपश्म-श्मपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहें! पवहें?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहृ! पवहृ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्नु! पवह्नु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्ल-ह्रपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्रपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपर्! पवर्?	पपरुं! पवरुं?	पपळ-ळपव		पपह्ल-ह्लपव	"नपवपन"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपह्र! पवह्र?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्रपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र-ङ्रपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदूं! पवदूं?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपर्दृं! पवदृं?	पपस-सपव	чч д-дча	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पप्रः! पवरः?		पपह-हपव	ччठ-ठ्रपव 	पपहॅं-हॅंपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरू! पवरू?	-	पपक़-क़पव	पपड्र-ड्रपव	पपहॄ-हॄपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपहुँ-हुँपव	"रपवपर"
	पपट्टा पवट्ट?	पपख-खपव	पपग़-ग़पव	पपद्र-द्रपव 	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठं! पवठ्ठं?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपर्-रूपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपडूँ! पवडूँ?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपडूँ! पवडूँ?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळू-ळूपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूँ! पवढूँ?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव		पपदूँ-दूँपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धे! पवद्धे?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त-क्तप व	पपर्दृ-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपरु-रूपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपऋ-ऋपव	-	"क़पवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्वं! पवद्वं?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ट-ट्रपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्धः! पबद्धः?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठु-ठ्ठपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्द! पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ट-ड्टपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्टु! पवष्टु?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपड्ड-ड्डपव	"ङपवपङ"	"ढ्रंपवपढ्रं"
पपओ! पवओ?	पपन्भ! पवन्भ?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपढ्ट-ढ्टपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्वपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्नं! पवह्नं?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	чч д- дча	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्नं! पवह्नं?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"अपवपअ"
	▼ =					

Erin McLaughlin

"ॲपवपॲ"	"ड्डपवपड्ड"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपहिपपहिंपपर्हिपप
"इपवपइ"	"ढूपवपढू"	11311 3000 3113	पपकिपपकिंपपर्किपप	पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
"ईपवपई"	"द्धंपवपद्धं"	पवप ₹१०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
"उपवपउ"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹२०१ वपव ——————	पपगिपपगिंपपर्गिपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹३०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए"	"द्भॅपवपद्भ"	पवप ₹४०१ वपव	पपङ्गिपपङ्गिपपङ्गिपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹६०१ वपव		
"ऐपवपऐ"	"ह्पवपह्"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"ओपवपओ"	"भपवपभ"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"		पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"ऋपवपऋ"	"ल्जपवपल्ज"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपर्टिपप	
"ऋपवपऋ"		००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
ऋषपनऋ "ऌपवपऌ"	"ह्रपवपह्न" "ट्राग्यट"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपर्डिपप	
	"ह्रपवपह्न" "नामान"	००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न" "नामान"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपर्णिपप	
lanana l	"ह्वपवपह्न"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"ङ्रपवपङ्र" " "		००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"छ्रपवपछ्र" "	"हुपवपहु" " "	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ट्रपवपट्र" "	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
" <u>д</u> чач <u>д</u> "	"हृपवपहृ" 	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपर्निपप	
"ड्रपवपड्र"	"हृपवपहृ"	., . ,	पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"द्रपवपद्र"	"हुपवपहु"	990,090,000	पपफिपपफिंपपर्फिपप	
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू"	008.080.888	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"रूपवपरू"	"रुपवपरु"	007.080.388	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ह्रपवपह्र"	"रूपवपरू"	003.080.388	पपमिपपमिंपपर्मिपप	
"ळ्रपवपळ्र"	"दुपवपदु"		पपयिपपयिंपपर्यिपप	
	"दूपवपदू"	00%.080.888	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृं"	००५.०१०.५११	पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"रूपवप्रुः"		006.080.688	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"ऋपवपऋ"		006.080.688	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्टपवपट्ट"		00८.0१०.८११	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"ट्रॅपवपट्रॅ"		ooq.oqo <u>.</u> qqq	पपषिपपषिंपपर्षिपप	
"ठ्ठपवपठ्ठ"			पपाषपपाषपपाषपप पपसिपपसिंपपर्सिपप	
"ड्रुपवपड्ड"			पपासपपासपपासपप	
6 6				

li Vowel sign	पपक्त्यिपप	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछ्विपप	पपर्ट्रिपप	पपर्लिपप	पपर्सिपप
clusters	पपर्क्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपट्रींपप	पपर्लिपप	पपर्खिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्विपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्खिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्र्वीपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपर्क्गिपप	पपक्स्डिंपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्र्घीपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्व्विपप	पपर्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्विपप	पपद्र्व्रिपप
पपर्क्छिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्द्ञ्यिपप
पपर्क्जिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपर्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपर्क्झिपप	पपर्क्यिपप	पपर्ग्ध्यपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्क्तिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्थ्विपप	पपर्झिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्विपप	पपर्त्सिपप	पपर्भिपप
पपर्क्ठिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्र्न्यपप	पपर्ड्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्र्ङीपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भिर्यपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज़िपप	पपईड्यिपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्भिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्क्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्णिपप	पपर्ख्णिपप	पपग्र्म्यपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ढीपप	पपर्त्यिपप	पपर्ध्विपप
पपर्क्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्र्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्धिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्त्स्लिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्वृट्यिपप	पपर्त्म्यिपप	पपर्ल्खिपप
पपर्क्निपप	पपर्खिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्हिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्स्निपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्मिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्हिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्स्यिपप	पपर्न्छिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्छिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपि्स्र्यपप	पपर्झिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्जिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्जिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्रिपप	पपर्थ्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्चिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्लिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्चिपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्सिपप	पपर्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्चिपप	पपर्ट्टिपप	पपर्त्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपर्क्ळिपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्ल्यपप	पपर्च्मिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्लिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्फिपप
पपक्क्यिपप	पपर्ग्हिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्चिपप	पपर्ट्हिपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्र्कीपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्भिपप
	पपर्ग्निपप	पपङ्खिपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्भिपप	पपर्मिपप

पपर्सिपप पपर्सिपप	पपर्श्विपप पपर्जिपप	पपर्म्बिपप पपर्म्भिपप पपर्म्मिपप पपर्म्मिपप पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपय पपर्ल्यिपय पपर्ल्यिपय पपर्ल्यिपय पपर्ल्यिपय पपर्ल्थिपय पपर्श्विपय	पपर्स्तिपप पपर्स्टिपप पपर्स्टिपप पपर्स्हिपप पपर्स्हिपप पपर्स्किपप	पपह्लिपप पपळ्विपप पपळ्विपप पपर्श्चिपप पपर्श्चिपप पपर्श्विपप
पपर्झिपप	पपर्भ्निपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्न्यिपप	
			•		
	*				
_					
पपर्व्हिपप पपर्व्हिपप	पपर्श्विपप पपर्श्विपप	पपर्ल्टिपप	पपश् <u>रि</u> पप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप पपर्णिपप	पपर्म्तिपप पपर्म्तिपप	पपर्ल्टिपप पपर्ल्टिपप	पपर्श्चिपप पपर्श्चिपप	पपहिंचप पपर्ह्निपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपह्लिपप पपर्ह्लिपप	
पपर्ष्यिपप पपर्ष्यिपप	पपान्द्रपप पपर्म्निपप	पपार्ल्डपप पपर्ल्डिपप	पपस्किपप पपर्स्खिपप		
पपाष्यपप पपर्दिपप	पपाम्नपप पपर्म्पिपप	पपाल्ढपप पपर्ल्तिपप	पपस्छिपप पपर्स्छिपप	पपर्ह्लिपप पपर्ह्लिपप	
पपाप्दपप	441+444	ччімпчч	प पास्छपप	पपाह्नपप	

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्शपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्छपपक्चप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्फपपक्यपप

पपष्कपपष्खपपघापपध्यपपष्डपपध्यप पध्छपपघ्जपपघ्झपपघ्अपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप पघ्डपपघ्णपपघ्तपपध्यपपघ्दपपध्यपपघ्मप पघ्नपपघ्मपपघ्कपपघ्अपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्सपपघ्लपपघ्ळपपघ्अपपघ्यप पद्भापपघ्सपपघ्सपपघ्हपपघ्कपपघ्खपपघ्मप पद्भापपद्भपपद्भपपद्भपपद्मपप पपक्कपपख्खपपग्गपपश्चपपद्धपपख्यप पच्छपपच्जपपद्धपपच्अपपच्टपपच्छप पद्धपपग्गपपन्तपपश्चपपद्धपपच्यप पज्ञपपन्यपपक्कपपव्खपपश्चपप्यप पग्नपपद्भपप्रक्षपपच्छपपच्यपपश्चप पत्थपप्रस्पपद्भपपद्धपपश्चपप्यप्यप पद्धपपद्धपपद्भपपद्धपप्रस्वपप्रस्वप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्चपपछूपपछऱपपछलप पछळपपछ्लपपछ्चपपछशपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्दपपज्छप पज्हपपज्णपपज्तपपज्थपपज्सपपज्भपपज्नप पज्नपपज्पपपज्भपपज्खपपज्भपपज्यप पज्जपपज्सपपज्लपपज्छपपज्छपपज्चपपज्शप पज्षपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञापपज्जप पज्डपपज्सपपज्कपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइटप पइढपपइगपपइतपपइथपपइदपपइथपपइनप पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइञपपइशप पइभपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप पइडपपइद्यपद्झपपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्ङपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्टपपञ्छपपञ्झप पञ्छपपञ्जपपञ्चपपञ्थपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्यपपञ्कपपञ्चपपञ्भपपञ्चप पञ्चपपञ्सपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्जप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्जप पञ्डपपञ्कपपञ्कपपञ्जप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्चप पट्नपपट्पपट्कपपट्ळपपट्मपपट्यप पट्रपपट्अपपट्लपपट्ळपपट्खपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्फपपट्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चप पर्छपपर्जपपर्झपपर्ञपपर्टपपृठुपपर्डप पर्टिपपर्णपपर्तपपर्थपपर्दपपर्थपपर्नप पर्निपपर्पपर्कपपर्वपपर्भपपर्मपपर्चिप पर्निपर्रिपपर्लपपर्व्यपर्शप पर्षपपर्सपपर्हिपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जिप पर्डिपपर्देपपर्कपपर्यप्य

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डुप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्लपपड्फपपड्यपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्षपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ञपपढ्गप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्जप पढ्डपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्ढ्पपढ्फपपढ्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्यपपत्ङपपत्यपपत्छप पत्नपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपप्त्पप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्थपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्नपपत्इपपत्कपपत्सपप

पर्यप्रक्रमपर्यप्रति पर्यप्रक्रमपर्यप्रक्रमपर्यप्रवेष पर्यप्रक्रमपर्यप्रक्षपपर्यप्रवेष पर्यप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षप पर्यप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षप पर्यप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रवेषप्रक्षपप्रक्षप पर्यप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षपप्रवेषप्रक्षपप्रक्षपप्रक्षप पर्यप्रक्षपप्रक्षपप्रवेषप्रवेषप्रक्षप्रक्षप्रक्षप्रक्षप्रक्षप्रवेष पर्यप्रक्षपप्रक्षपप्रवेषप्रक्षप्रवेषि पपद्कपपद्खपपद्वपपद्वपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्टपपद्णपपद्तपपद्थपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपद्कपपद्वपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्डपपद्कपपद्यप

पपध्कपपध्खपपभापपश्चपपध्लपपश्चप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्लप पध्लपध्णपपस्तपपथ्यपपध्दपपश्चपपध्नप पभापध्सपपध्कपपध्लपपध्लपपध्मपपश्चप पश्चपपध्सपपध्लपपध्लपपध्लपपश्चपपध्लप पष्मपपध्सपपध्लपप्रक्षपपध्लपपश्चप पष्ट्रपपध्लपप्रक्षपपश्चपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्मप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्सपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्डपपन्सपपन्यपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्य पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपञ्चपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्यपप

पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपद्धपपप्छप पप्जपपद्भपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्यपप्पप पप्तपपध्यपपद्धपपध्यपप्रपप्नपप्पपपप्पप पप्बपपध्भपपप्मपपप्यपप्रपपप्रपपप्लपपप्कप पप्ळपपप्वपपद्भपप्षपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापप्जपपद्धपपप्कपप्रप्रपप् पपफ्कपपफ्खपपफापपफ्घपपफ्डपपफ्चप पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप पफ्टपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप पफ्नपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्शपपफ्यप पफ्रपपफ्रपपफ्लपपफ्छपपफ्डपपफ्शप पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्कपपफ्खपपफापफ्जप पफ्डपपफ्डपपफ्कपपफ्सपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्घपपभ्रःपपभ्चपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्दपपभ्धपपभ्रःपपभ्रःप पभ्जपपभ्कपपभ्रःपपभ्शपपभ्नपपभ्रःप पभ्यपपभ्कपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःप पभ्सपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःप पभ्सपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःपपभ्रःप पभ्रःपपभ्रःपपभ्रः

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्घपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्घपपम्डपपम्प पम्जपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्भपपम्नप पम्कपपम्छपपम्वपपम्शपपम्भपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्हपपम्भप पम्झपप

पपय्कपपय्खपपय्गपपय्घपपय्ङपपय्घपपय्छप पय्जपपय्झपपय्भपपय्टपपय्छपपय्डपपय्छप पय्भपपय्बपपय्भपपय्मपपय्यपप्रमपय्भपप्यम पय्भपप्रखपपय्भपपय्भपप्यमप्रमपय्भपप्रसपप्रभप पय्भपय्खपप्रयापय्भपप्रभपय्भपप्रभपय्भप प्रयाप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्छपपर्पपर्यप पर्दपपर्थपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्छपपर्छपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्क्षपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्छप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्छप पन्तपपश्चपपन्दपपश्चपपन्नपपन्नपपन्मप पन्वपपश्चपपन्यपप्रूपपन्नपपन्कप पन्जपपन्वपपश्चपपन्सपपन्हपपक्रपपन्खप पन्नपपन्जपपन्डपपन्कपपन्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्दप पत्जपपत्नपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नप पत्नपपत्कपपत्वपपत्भपपत्नपपत्नप पत्नपपत्कपपत्वपपत्भपपत्वपपत्थप पत्नपपत्कपपत्कपपत्वपपत्शपपत्थप पत्सपपत्हपपत्कपपत्खपपत्गपपत्जपपत्डप पत्दपपत्कपपत्यपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळभपपळनपपळनपपळपपळभपळबप पळभपपळमपपळथपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळगपपळजपपळइप पळढपपळफपपळखप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथप पळभपपळनपपळनपपळपपळपप पळभपपळमपपळयपपळपपळअपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळअपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रापपळजपपळइप पळहपपळकपपळखपप

पपक्कपपव्खपपवापपव्यपपत्छपपव्यपपत्छप पञ्जपपव्सपपञ्जपपव्यपपञ्जपपत्छपपव्यपप्रमप् पव्यपपञ्चपपव्यपपञ्चपपञ्जपप्रमपञ्जप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपप्रमप्रमप्

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्खप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्नप पश्पपश्कपपश्खपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्ढपपश्कपपश्यपप पपष्कपपष्खपपणापपष्घपपष्डपपष्कपपष्यपपष्यपप्य पष्जपपष्यपपष्यपपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्जपपष्यपपष्यपपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्जपपष्मपपष्यपपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्खपपष्मपप्रज्ञपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्खपपष्मपप्रज्ञपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्खपपष्मपप्रज्ञपपष्ठप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्थपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्थपपस्तपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्हपपस्कपपस्यपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्थपपस्ङपपस्थपपस्छप पस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डपप पह्लपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपह्लपपस्नप पस्फपपस्बपपस्थपपह्लपपह्लपपस्यप पस्कपपस्खपपह्लपपस्शपपस्थपपस्सपपस्हप पस्कपपस्खपपस्गपपस्जपपस्डपपस्डप पस्कपपस्खपपस्गपप

पपक्ष्कपपक्ष्खपपक्ष्मपपक्ष्घपपक्ष्डपपक्ष्चप पक्ष्छपपक्ष्जपपक्ष्झपपक्ष्ञपपक्ष्टपपक्ष्ठपपक्ष्डप पक्ष्डपपक्ष्णपपक्ष्तपपक्ष्थपपक्ष्यपपक्ष्मपप पक्ष्पपपक्ष्मपपक्ष्यपक्ष्मपप पपक्ष्यपपक्ष्मप पक्ष्यपक्ष्मपवपपक्ष्मपप पपक्षपपक्ष्मपप

पपक्कपपक्खपपक्रापपक्चपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्डपपक्रणपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्रपपक् पप पक्षपपक्षपपक्षपपक्षपप पपक्यपपक्लपपक् ळप पक्षपपवपपक्शपप पपक्षपपक्सपपक्सपप

less common half-forms

पपरक्रपपरख्रपपरग्गपपर्घ्यपपरङ्गपपर्घ्यपपरछ्प पर्च्यपपरझ्रपपरञ्जपपरद्यपपरञ्जपपर्द्धप पर्ग्यपपरत्यपपरभ्रपपरद्यपपरभ्रपपर्मप पर्म्यपपर्भ्यपपरभ्रपपप्रमपप पर्द्धपपरभ्रपव्यपपरश्रपप पपरभ्रपपरस्मपपर्द्मप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्ध-छप पद्धजपपद्धझपपद्धअपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्ध-ढप पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धपप पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्ध-हपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्झपपद्चपपद् छप पद्जपपद्झपपद्ञपपद्दटपपद्दठपपद्दडप पद्दणपपद्दतपपद्थपपद्दपपद्दपप पद्दफपपद्वपपद्भपपद्मपप पपद्यपपद्दलप पद्दळपपद्दपपद्शपप पपद्वपपद्सपपद्हपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पपर्क्रपपरुखपपरुगपपरुघपपरुङ्पपरुचप परुखपपरुजपपरुझपपरुञपपरुटपपरुठप परुडपपरुढपपरुणपपरुतपपरुथपपरुदपपरुधप परुनपपरुपपपरुफपपरुबपपरुभपपरुमप

पञ्चपपञ्जपपञ्ळपपञ्जपपवपपञ्शप पञ्जपपञ्जसपपञ्हसप

पपक्रपपख्रपपग्राप

पपज्रकपपज्रखपपज्रापपज्रधपपज्रह्मपपज्रखप पज्रापपज्रह्मपपज्ञपपज्रहमपज्रहप पज्रापपज्रापपज्रथपपज्रहमपज्र्यपपज्रमप पज्रक्षपपज्र्थपपज्रमपपज्रमप पज्रक्षपपज्रमपपज्रशपपज्रमपपज्रहमप

पपण्कपपण्खपपण्जापपण्डपपण्डपपण्डपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्दपपण्थपपण्जपपण्पप पण्कपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्रपवपपण्शपप पपण्यपप्रसपपण्हपप

पपःकपपःखपपःगपपश्चपपःखपपःखप पःजपपःखपपःञपपःद्यपग्छपपःखपपःगप पःजपपश्चपपःद्यपश्चपपःगपःगपःयपः पश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पश्चपपःश्चपपःश्चपपः

पपश्र्वपपश्र्वपपश्रापपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्मपपश्र्वपपश्र्मपपश्र्वपपश्र्मप पश्र्मपपश्र्वपपश्र्मपपश्रमपप पपश्र्यपपश्र्मप पश्र्वपपश्रमपवपपश्रापप पपश्र्वपपश्रमपपश्रह्मप

पप्रक्रपप्रख्यप्रभापप्रथ्यप्रश्चपप्रख्यप्रध्यप्रध्यप्रभापप्रख्यप्रभापप्रथ्यप्रश्चपप्रश्चपप्रख्यप्रध्यप्रभापप

पपन्क्रपपन्खपपन्नापपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्दपपन्छपपन्छप पन्नापपन्नपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्भप पन्नपपन्भपपन्भपप पपन्यपपन्नपपन्कपपन्भप वपपन्भपप पपन्थपपन्सपपन्हपप

पप्रक्रपप्रख्यपप्रापप्रघपप्रङ्यपप्रचपप्रखप प्रजपप्रद्भपप्रञपपप्रद्यपप्रथपप्रचपप्रणप प्रजपप्रथपप्रद्यपप्रथपप्रजपप्रपप्रफपप्रबप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रजपप्रखपप्रप्रपवप प्रशपप पप्रथपप्रसपप्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रधपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रयपपप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रथपपप्रशपप पपप्रथपपप्रलपपप्रहपप

पपक्रपपब्रखपपब्रापपक्रयपब्र्ड-पपब्र्यपपब्र्डप पब्र्जपपब्र्झपपब्र्जपपब्र्टपपब्र्डपपब्र्डप पब्र्णपपब्रापपब्र्थपपब्र्दपपब्र्धपपब्र्नपपब्र्मप पब्र्बपपक्र्मपपब्रमपप पपब्र्यपपब्र्जपपब्र्जपपब्रमपव पपब्र्शापप पपब्र्षपपब्रसपपब्रह्मपप